श्रीसीतारामाभ्यां नमः

दुर्वादध्वान्तमार्तण्डसिद्धसम्राट्

जगद्गुरु श्रीराघवानन्दाचार्यप्रणीता

श्रीसीतामङ्गलमाला

हर्यानन्दं गुरुं नत्वा रामं सीतां च मारुतिम् ।
श्रीसीतामङ्गलानां च सन्मालां विदधाम्यहम् ॥१॥

श्रीहनुमते नमः

प्रस्थानत्रयानन्दभाष्यकाराय नमोनमः

आनन्दभाष्यसिंहासनासीन जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य

श्रीरामेश्वरानन्दाचार्य

प्रणीता

बालबोधिनी

सीतानाथसमारम्भां रामानन्दार्यमध्यमाम् ।
रामप्रपन्नगुर्वन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम् ॥

श्रीसम्प्रदाय के २१ वें आचार्य सिद्ध सम्राट् जगद्गुरु श्रीराघवानन्दाचार्यजी श्रीसीता मंगलमाला दिव्य प्रबन्ध के निर्माणार्थ प्रथम शिष्टाचार प्रयुक्त मंगलाचरण करते हुये स्वाचार्य श्रीरामानन्दसम्प्रदाय के २० वें आचार्य जगद्गुरु श्रीहर्यानन्दाचार्यजी श्रीसम्प्रदाय के आदि पुरुष सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी तथा श्रीरामाभिन्न स्वरूपा सर्वेश्वरी श्रीसीताजी और अनन्य श्रीरामजी के सेवक श्रीहनुमानजी को सादर

मङ्गलवासिनी या च जगन्मङ्गलकारिणी ।

दण्डवत प्रणाम कर श्रीसीता मंगलमाला का प्रणयन करने के लिये कहते हैं-हर्यानन्दमित्यादि । सर्वेश श्रीरामजी श्रीसीताजी तथा श्रीमारुतिनन्दनजी को सादर नमन कर निजाचार्य गुरुदेव श्रीहर्यानन्दाचार्यजी को सादर वन्दना करके श्रीसीता मंगलमाला नामके दिव्य प्रबन्ध को बनाता हूँ अथवा श्रीसीताजी के मंगल नाम समूहों की सुन्दर माला को गूंथता हूँ जिसके धारण यानी जप करने से मानव तीन पातों को दूरकर अन्त में सायुज्य मुक्ति प्राप्त करलेता है । श्लोक में आये चकार से अपने गुरुदेव २० वें आचार्यजी से ऊपर तथा श्रीहनुमानजी तीसरे आचार्यजी से नीचे के श्रीब्रह्माजी श्रीवशिष्ठजी श्रीपराशरजी श्रीव्यासजी श्रीशुकदेवजी श्रीपुरुषोत्तमाचार्यजी बोधायन श्रीगंगाधरा चार्यजी श्रीसदानन्दाचार्यजी श्रीरामेश्वरानन्दाचार्यजी श्रीद्वारा-नन्दाचार्यजी श्रीदेवानन्दाचार्यजी श्रीश्यामानन्दाचार्यजी श्रीश्रुतानन्दाचार्यजी श्रीचिदानन्दाचार्यजी श्रीपूर्णानन्दाचार्यजी तथा श्रीश्रियानन्दाचार्यजी यों १६ आचार्यों का ग्रहण होता है । प्रकृत दिव्य प्रबन्धकार के शिष्य प्रस्थानत्रयानन्द भाष्यकार जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी २२ वें आचार्य हैं। अनन्तर १९ आचार्यों की नामावली निम्न प्रकार है जगद्गुरु श्रीभावान्दाचार्यजी जगद्गुरु श्रीअनुभवानन्दा चार्यजी जगद्गुरु श्रीविरजानन्दाचार्यजी जगद्गुरु श्रीआशा

तस्यै मङ्गलरूपायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥२॥
अनाघ्रातजगद्द्वन्द्वा याऽऽश्रितद्वन्द्वनाशिनी ।
तस्यै चाश्रयवर्यायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥३॥

रामाचार्यजी (हाथीरामजी) जगद्गुरु श्रीरामभद्राचार्यजी जगद्गुरु श्रीरघुनाथाचार्यजी जगद्गुरु श्रीविश्वम्भराचार्यजी जगद्गुरु श्रीराघवेन्द्राचार्यजी जगद्गुरु श्रीवैदेहीवल्लभाचार्यजी जगद्गुरु श्रीकोसलेन्द्राचार्यजी जगद्गुरु श्रीरामकिशोराचार्यजी जगद्गुरु श्रीजानकीनिवासाचार्यजी जगद्गुरु श्रीसाकेतनिवासाचार्यजी जगद्गुरु श्रीजानकीजीवनाचार्यजी जगद्गुरु श्रीभरताग्रजाचार्यजी जगद्गुरु श्रीहनुमदाचार्यजी महामहोपाध्याय जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यश्रीरघुवराचार्यजी वेदान्तकेसरी जगद्दुरु श्रीरामानन्दाचार्यश्रीरामप्रपन्नाचार्यजी योगीन्द्र तथा इस टीका के लेखक आनन्दभाष्यसिंहासनासीन जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य स्वामीश्रीरोश्वरानन्दाचार्यजी इस प्रकार श्रीरामानन्दसम्प्रदाय की पूरी आचार्य परम्परा को समझलेना चाहिये ॥१॥

जो सर्वेश्वरी श्रीसीताजी सर्व मंगल स्वरूपा तथा सर्व मंगलों में निवास करनेवाली और सव जगत का मंगल करनेवाली हैं, उन सर्व मंगलरूपा श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥२॥

जो संसार द्वन्द्वों से यानी हेय सांसारिक सुख दुःखादिक कार्य कलापों से सर्वदा अनाघ्रात अर्थात्

शान्तिमद्रामकान्तायै हन्त्र्यै च सकलागसाम् ।
तस्यै पापविहीनायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥४॥
अविनाशि स्वरूपायै नाशिन्यै सकलापदाम् ।
प्रपन्नानन्ददायिन्यै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥५॥
भक्तकल्पलतारामलोकाभिराममूर्त्तये ।
आपद्विरामरूपायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥६॥
सर्वविद्याधिराध्यायै रहितायै त्वविद्यया ।
वेदवेद्यानवद्यायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥७॥

असंपृष्ट तथा स्वाश्रित जनों के द्वन्द्वों संसारिक फन्दों का सदा के लिये नाश करनेवाली उन आश्रय देनेवालों में सर्वश्रेष्ठ श्रीसीताजी का सदा मंगल हो श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥३॥

शान्त स्वरूप श्रीरामचन्द्रजी की प्रिया तथा सम्पूर्ण पापों का नाश करनेवाली उन सर्व पापों से रहित श्रीसीताजी का सदा मंगल हो ॥४॥

अविनाशि स्वरूपवाली तथा सम्पूर्ण आपत्तियों को नाश करनेवाली और प्रपन्न-शरणागत जनों को आनन्द देनेवाली श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥५॥

भक्तजन कल्पलता के लिये सुन्दर बगिचा स्वरूपा तथा सर्वलोक मनोहारी अति सुन्दर मूर्त्तिवाली और सर्व आपत्तियों के विराम यानी अन्त कर देनेवाली श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥६॥

सम्पूर्ण विद्याओं से सदा समाराधिता तथा अविद्या से

चिदचिद्भ्यां विशिष्टायै रक्षित्र्यै शिष्टकर्मणां ।
सच्चिदानन्दरूपायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥८॥
ब्रह्माभिन्नस्वरूपाया कार्यकारणरूपिणी ।
तस्यै च प्राप्तकामायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥९॥
भक्तितन्त्रस्वतन्त्रायै चार्थदायै श्रितार्थिनाम् ।
भक्त्यामुक्तिप्रदायै च श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥१०॥

रहित और वेद वेदान्त से जाने जा सकनेवाली तथा पाप और कलंक से सर्वथा रहित श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥७॥

चित्-चेतन तत्त्व जीवात्मा तथा अचित् अचेतन तत्त्व प्रकृति प्रभृति से विशिष्ट-युक्त तथा शिष्ट कर्म यानी वेद विहीत कर्मों की रक्षा करनेवाली सत् चित् तथा आनन्द स्वरूपा श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥८॥

जो परब्रह्म श्रीरामजी से अभिन्न स्वरूपवाली तथा कार्य और कारण स्वरूपा हैं ऐसी संप्रात सर्व कामना वाली श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥९॥

अनन्य भक्ति से साधक के वश रहते हुये भी सर्वदा स्वतन्त्र रहनेवाली तथा अपने आश्रित सभी जनों को इच्छित पदार्थ देनेवाली और भक्ति से ही आराधकों को सायुज्य मुक्ति प्रदान करनेवाली श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥१०॥

सर्वाधिपत्यशीला या सर्वज्ञा सर्वशेषिणी ।
सुस्वामिन्यै श्रियै तस्यै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥११॥
परसौन्दर्यशालिन्यै दोषवर्ज्यगुणाब्धये ।
सर्वचित्तापहारिण्यै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥१२॥
वेदोपवृंहणे श्रीमद्रामायणे महद्यशः ।
यस्याश्च विद्यते तस्यै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥१३॥
हृद्यायै दिव्यदेहायै भूषितायै विभूषणैः ।
दिव्यपरिच्छदायै च श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥१४॥

जो सर्वजन यानी चराचर जगत के अधिपति स्वामिनी हैं तथा सर्वज्ञ और सर्वशेषी स्वरूपा हैं ऐसी सर्व जगत की स्वामिनी श्री-यानी षडैश्वर्य शालिनी श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥११॥

परम सुन्दरता से युक्त यानी लोकोत्तर सुन्दरी तथा सभी दोषों से रहित और सभी गुणों के समुद्र स्वरूपा तथा चराचर जगत के चित्त को अपहरण करनेवाली अर्थात् सभी को संमोहित करनेवाली श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥१२॥

वेदों के उपवृंहण अर्थात् वेदों में संक्षिप्त रूपसे वर्णित सर्वेश श्रीरामजी के चरित्रों को विस्तृत रूपसे वर्णन करनेवाले श्रीमद्रामायण में जिन सर्वेश्वरी श्रीसीताजी का महान् यश वर्णित है उन सर्वजन समाराधनीया श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥१३॥

मनको आह्लादित करनेवाली तथा दिव्य विभूषणों से

अन्तर्बहिश्च व्याप्तायै सर्वस्य जगतः सतः ।
अन्तर्यामिस्वरूपायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥१५॥
परित्राणाय साधूनां धर्मसंस्थापनाय च ।
धृतसीतावतारायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥१६॥
सर्वावतारमूलायै विनाशिन्यै च रक्षसाम् ।
धर्मरक्षाविधायिन्यै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥१७॥
मिथिलेशतनूजायै भूमिजायै तथैव च ।
प्रियायै राघवेन्द्रस्य श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥१८॥

विभूषित दिव्यातिदिव्य देहवाली और दिव्य परिच्छदों-छत्र चामर व्यजनादि से सर्वदा सुशोभित श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥१४॥

सर्वदा सत्य रूपसे समवबोधित सम्पूर्ण जगत को अन्दर तथा बाहर से व्याप्तकर अन्तर्यामी स्वरूप से रहनेवाली श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥१५॥

साधु-श्रीविभीषण प्रभृति सदाचरणशील समस्त सज्जनों की रक्षा तथा ग्लानि प्रायः सनातन वैदिक धर्म की पुनः स्थापना के लिये दिव्य मानव आकृति रूपमें श्रीसीताजी के स्वरूप में अवतार धारण करनेवाली श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥१६॥

सम्पूर्ण अवतारों के मूल कारण तथा धर्म विरोधी राक्षसों का नाश करके धर्म की रक्षा करनेवाली श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥१७॥

पृथिवी से सम्मुत्पन्न हुई पर पालक पिता होने से

ब्रह्माण्डानामनन्तानां हेतवे चाधकेतवे ।
सेतवे च भवाम्भोधेः श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥१९॥
सुरासुरेश्वरैश्चाथ पूजितायै मुनीश्वरैः ।
कर्मणां फलदायै च श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥२०॥
रामेण परिणीता या वने रामानुगामिनी ।
तस्यै पत्यनुवर्त्तिन्यै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥२१॥

मिथिलेश-राजा जनक की पुत्री के रूपमें प्रसिद्ध तथा श्रीराघवेन्द्रजी की प्रिया धर्मपत्नी श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥१८॥

अनन्त कोटि ब्रह्माण्डों के उत्पन्न करने में निमित्तोपादान कारण स्वरूपा तथा अधर्म के नाश करने के लिये केतु स्वरूपा और संसार रूप समुद्र से पार उतरने के लिये सेतु-पुल के रूपमें प्रसिद्ध श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥१९॥

सुरेश्वर असुरेश्वर और मुनीश्वरों से पूजित आराधना-पूजा कर्म के अनुसार सभी को उचित फल देनेवाली श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥२०॥

जो श्रीरामजी के साथ विवाहित होकर श्रीरामचन्द्रजी के वनवास में भी उनका अनुगमन कर वन में चली गई ऐसी पतिव्रता शिरोमणि पतिदेव का सर्वदा अनुगमन करनेवाली श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥२१॥

चित्रकूटं गता या च चित्रकूटस्थ पूजिता ।
तस्यै चित्रकूटीरायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥२२॥
अनसूयोपदिष्टायै रक्षितायै च शार्ङ्गिणा ।
मन्दाकिनी विहारिण्यै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥२३॥
फलाहारेण तुष्टायै हृष्टायै रामसेवया ।
गोदावरीविहारिण्यै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥२४॥
सुवर्णवत् सुवर्णायै सुवर्णमृगलिप्सवे ।
सिन्धवे च सतीत्त्वस्य श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥२५॥

जो श्रीरामजी के साथ चित्रकूट में चली गई थी तथा चित्रकूट निवासी जनों तथान्य देव समूहों से पूजित हुई और चित्रकूट में देवों द्वारा निर्मित कुटी में श्रीरामजी के साथ निवास की उन श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥२२॥

श्रीअनसूयाजी से पतिव्रत धर्म का उपदिष्टा तथा श्रीरामचन्द्रजी से रक्षित और मन्दाकिनी में विहार करनेवाली श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥२३॥

फलों के आहार से ही संतुष्ट तथा सर्वेश्वर श्रीरामजी की सेवाकर अति प्रसन्न रहनेवाली और गोदावरी नदी में विहार करनेवाली श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥२४॥

सोने के समान अति सुन्दर वर्ण-आकृतिवाली और सुवर्णाकृति माया मृगको चाहनेवाली तथा सतीत्व यानी

रावणेन हृतायै च रक्षितायै जटायुषा ।
अशोकवनवासिन्यै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥२६॥
या रक्षिता स्वधर्मेण राक्षसीभिश्च तर्जिता ।
तस्यै महाविपन्नायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥२७॥
मारुत्याऽऽश्वासितायै च सन्दिष्टायै च शार्ङ्गिणा ।
मुद्रिकां प्राप्य हृष्टायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥२८॥
प्राणप्रियस्य रामस्य सद्दर्शनैक हेतवे ।
प्राणाश्च धारयन्त्यै हि श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥२९॥

पतिव्रता धर्म के समुद्र स्वरूपा श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥२५॥

श्रीरामजी की अवतार लीला सम्पादनार्थ रावण से अपहृत होने पर श्रीजटायु द्वारा संरक्षित तथा अशोक वन में निवास करनेवाली श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥२६॥

लंका के ओशोक वन में राक्षसीओं से क्लेशित होने पर जो श्रीसीताजी अपने ही स्वत्व रूप धर्म से अपने आप में ही रक्षित हुई हैं ऐसी महाविपन्नावस्था में स्थित श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥२७॥

मरुतनन्दन श्रीहनुमानजी से समाश्वासित तथा सर्वोत्कृष्ट शार्ङ्ग धनुर्धारी श्रीरामजी से भेजे गये दिव्य सन्देश तथा श्रीरामचन्द्रजी की मुद्रिका प्राप्तकर अति प्रसन्न हुई श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥२८॥

अपने प्राण प्रिय सर्वेश्वर श्रीरामजी के दिव्य दर्शन

अन्विष्टायै च मारुत्या वन्दितायै तथैव च ।
मारुतेर्वरदायै च श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥३०॥
लङ्कायां च प्रदग्धायां मणिं दत्त्वा च मारुतिम् ।
सन्देशप्रेषयित्र्यै च श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥३१॥
ब्रह्मादिभिः सुरैर्या च स्तुता वानरसेनया ।
तस्यै चाग्निप्रशस्तायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥३२॥
भवाब्धितारिणी या च कारिणी सर्वसम्पदाम् ।
तस्यै विपत्तिहारिण्यै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥३३॥

के लिये ही प्राण धारण करनेवाली श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥२९॥

श्रीरामचन्द्रजी के आज्ञानुसार श्रीमारुति द्वारा अन्वेषण की गई तथा श्रीहनुमानजी से सादर प्रणाम की गई और श्रीनुमानजी को वरदान देनेवाली श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥३०॥

श्रीहनुमानजी से लंका जलादेने पर श्रीमरुतनन्दनजी को मणि देकर स्वप्राणाधार श्रीरामजी के लिये सन्देश भेजनेवाली श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥३१॥

जो ब्रह्मा विष्णु शंकर इन्द्र वरुण प्रभृति देवताओं तथा वानरी सेना समूहों से संस्तुति की गई और अग्निदेव द्वारा विशुद्धता के विषय में सुप्रशंसित उन श्रीजनक नन्दिनी श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥३२॥

जो शरणापन्न जनों को संसार समुद्र से तारनेवाली हैं

सफलपूजना या च सफलस्तुति कीर्तना ।

तस्यै सफलनत्यै च श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥३४॥

रामेच्छया विना या च किञ्चित्कर्तुं हि नेच्छति ।

तस्यै रामानुकूलायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥३५॥

यदिच्छया विनारामः कर्त्तुं किञ्चिन्न वाञ्छति ।

तस्यै रामानुसारिण्यै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥३६॥

तथा सर्व सम्पत्ति को प्रदान करनेवाली हैं उन सर्व विपत्ति जालों को हरण करनेवाली श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥३३॥

जिन सर्वेश्वरी श्रीसीताजी की पूजा-आराधना सर्वदा सफल होती है तथा उनका संकीर्त और स्तुति-प्रार्थना तथा नमन-नमस्कार प्रणामादि सभी सर्वथा सफल होते हैं उन श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥३४॥

जो सर्वेश्वरी श्रीसीताजी अपने प्राणाधार सर्वेश्वर श्रीरामजी की इच्छा के विना कोई भी कार्य करने की इच्छा नहीं रखती हैं उन श्रीरामानुकूल श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥३५॥

जिन श्रीसीताजी के विना सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी भी कोई क्रिया सम्पादन की इच्छा नहीं रखते हैं उन श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥३६॥

यस्याश्च नाधिका काचित् काचिन्नास्ति च यादृशी ।
तस्यै साम्यविहीनायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥३७॥
ऐश्वर्ये चाथ माधुर्ये रामब्रह्मसमा हि या ।
तस्यै रामानुरूपायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥३८॥
रामवत् सत्यसङ्कल्पा सत्यकामा च या तथा ।
तस्यै रामसमानायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥३९॥
रामस्य हर्षदा या च यस्या रामोऽपि हर्षदः ।
तस्यै रामसमानायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥४०॥

जिन श्रीसीताजी से अधिक सत्व सम्पन्न तत्त्व या उनके समान भी कोई नहीं हैं ऐसी अपने समान अन्य जनों से रहित श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥३७॥

जो श्रीसीताजी ऐश्वर्य तथा माधुर्य में परब्रह्म श्रीरामचन्द्रजी के ही समान हैं उन श्रीरामजी के अनुरूप श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥३८॥

जो श्रीसीताजी श्रीरामचन्द्रजी के समान सत्य संकल्प वाली तथा सत्य कामना वाली हैं उन श्रीरामजी के समान श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥३९॥

जो श्रीसीताजी सर्वेश श्रीरामजी को हर्ष प्रदान करनेवाली हैं तथा श्रीरामचन्द्रजी भी जिन श्रीसीताजी को हर्ष प्रदान करते हैं ऐसी श्रीरामजी के समान स्वरूपा श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥४०॥

रामवत् दोषहीना या रामवत् या गुणाम्बुधिः ।
तस्यै रामसमानायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥४१॥
रामवत् सर्वशक्तिर्या जगद्धेतुश्च रामवत् ।
तस्यै रामसमानायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥४२॥
रामवद्भुक्तिदा या च रामवन्मुक्तिदा च या ।
तस्यै रामसमानायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥४३॥
रामवत् सकलात्मा या सर्वेश्वरी च रामवत् ।
तस्यै रामसमानायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥४४॥

जो श्रीरामजी के समान ही सभी प्रकार के दोषों से रहित तथा श्रीरामचन्द्रजी के समान ही गुणों के महासमुद्र हैं ऐसी सर्व गुण सम्पन्न श्रीरामजी के ही समान स्वरूप से स्थित श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥४१॥

जो श्रीरामजी के समान ही सर्वशक्ति सम्पन्न हैं तथा श्रीरामचन्द्रजी के समान ही संसार का अभिन्न निमित्तोपादान कारण भी हैं ऐसी श्रीरामजी के समान स्वरूपा श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥४२॥

जो श्रीरामजी के ही समान शरणापन्न जनों को सायुज्य मुक्ति देनेवाली तथा श्रीरामचन्द्रजी के ही समान ऐहिक भोगों को भी देनेवाली हैं ऐसी श्रीरामजी के समान स्वरूपा श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥४३॥

जो श्रीसीताजी श्रीरामजी के समान सव जीवों के आत्मा रूप तथा सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी के ही समान

सर्वेभ्योऽभयदात्री या प्रपत्त्या रामवच्च या ।
तस्यै रामसमानायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥४५॥
रामवद्वीक्षते या न श्रिताघांश्चात्मवत्तया ।
तस्यै रामसमानायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥४६॥
विशिष्टा स्थूलसूक्ष्माभ्यां चिदचिद्भ्यां च रामवत् ।
तस्यै हि चाद्वितीयायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥४७॥

सर्वेश्वरी भी हैं उन सर्वतोभाव से श्रीरामजी के समान स्वरूपा श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥४४॥

जो शरण में आये हुये सभी जीवों को अभय दाता श्रीरामजी के ही समान ही शरणापन्न सभी को अभय प्रदान करनेवाली हैं उन श्रीरामजी के समान सर्वाभयदात्री श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥४५॥

जो श्रीरामचन्द्रजी के समान ही अपने आश्रित यानी अपने शरण में आये हुये जीवों के अघ-अपराधों को नहीं देखती अर्थात् उन उन अपराधों की उपेक्षा करदेती हैं उन श्रीरामजी के समान ही गुण धर्मवाली श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥४६॥

जो श्रीसीताजी श्रीरामचन्द्रजी के समान स्थूलचित् तथा अचित् और सूक्ष्मचित् तथा अचित् से विशिष्ट यानी युक्त ही सर्वदा रहती हैं उन अद्वितीय स्वरूपा श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥४७॥

यस्य स्मरणमात्रेण बाह्याभ्यन्तश्च शुध्यति ।
शुचीनां शुचये तस्यै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥४८॥
नामकीर्तनतो यस्या अपूर्णं पूर्णतामियात् ।
तस्यै पूर्णस्वरूपायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥४९॥
यद्भक्तिर्मुक्तिधाम्नश्चाकण्टका राजपद्धतिः ।
तस्यै च भजनीयायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥५०॥
यस्याः प्रपत्तितश्चैव दैवी माया निवर्त्तते ।
तस्यै शरण्यवर्यायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥५१॥

जिन श्रीसीताजी के स्मरण करने मात्र से ही बाहर तथा अन्दर शुद्ध हो जाता है ऐसी पवित्रातिपवित्र श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥४८॥

जिन श्रीसीताजी के नामका संकीर्तन करने से अपूर्ण भी पूर्ण हो जाता है उन पूर्ण स्वरूपा श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥४९॥

जिन श्रीसीताजी की भक्ति मुक्तिधाम का कांटों से रहित राज मार्ग है उन सर्वदा भजनीय स्वरूपा श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥५०॥

जिन श्रीसीताजी की प्रपत्ति से दैवी माया भी निवृत्त हो जाती है उन सर्वश्रेष्ठ शरण्य श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥५१॥

निराधारा तथा या हि सर्वाधारस्वरूपिणी ।
तस्यै स्वमहिमस्थायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ।।५२।।
धर्मार्थकाममोक्षाख्यपुरुषार्थप्रदा च या ।
तस्यै वदान्यवर्यायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ।।५३।।
सच्चारित्रेण युक्ता या सर्वभूतहितैषिणी ।
तस्यै दोषविहीनायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ।।५४।।
क्षमापुत्री क्षमाकर्त्री याऽपकारं करोति न ।
तस्यै क्षमाब्धिरूपायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ।।५५।।

जो अन्य आधार से रहित निराधार होते हुये भी सर्व चराचर विश्व का आधार स्वरूपा हैं उन अपने ही महिमा में अवस्थित सर्वाधार श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ।।५२।।

जो जीवों को धर्म अर्थ काम तथा मोक्ष रूप चारों पुरुषार्थों को प्रदान करनेवाली हैं उन वदान्यों यानी उदार-दयालु-दानशीलों या अहैतुकी कृपालुओं में श्रेष्ठ श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ।।५३।।

जो सत् चरित्रों से युक्त हैं तथा सभी भूत प्राणि वर्गों की कल्याण चाहनेवाली हैं ऐसी सम्पूर्ण दोषों से रहित श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ।।५४।।

जो क्षमा-पृथिवी की पुत्री हैं तथा अपराधी जनों को भी क्षमा करदेनेवाली हैं और कभी भी किसी का भी अपकार नहीं करती हैं उन क्षमा के समुद्र स्वरूपा श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ।।५५।।

कोटिसूर्यप्रभाढ्या या शीतला कोटिचन्द्रवत् ।
तस्यै चाद्भूतरूपायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥५६॥
जगदन्तर्बहिष्ठायै सर्वब्रह्माण्डयोनये ।
अनादिनिधनायै च श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥५७॥
योगदायै सुयोग्यायै योगीड्यायै तथैव च ।
योगफलप्रदायिन्यै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥५८॥
शोकहन्त्र्यै विशोकायै सर्वदायै च सर्वदा ।
रामाभिन्नस्वरूपिण्यै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥५९॥

जो करोड़ों सूर्यों के प्रभा से युक्त होते हुये भी करोड़ों चन्द्रमा के समान अत्यन्त शीतल हैं उन अति विलक्षण स्वरूपा सर्वाधारभूता श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥५६॥

जगत के अन्दर तथा बाहर सभी स्थानों में पूर्णतया व्याप्त और सभी ब्रह्माण्डों की योनि-उत्पत्ति स्थान तथा आदि और अन्त से रहित यानी उत्पत्ति तथा विनाश रहित नित्य स्वरूपा श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥५७॥

योग को प्रदान करनेवाली अत्यन्त योग्य स्वरूपा तथा योगि जनों द्वारा समाराधित और योग के फलों को प्रदान करनेवाली सर्व प्रकार के फलों के दाता श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥५८॥

जनों के शोक को नाश करनेवाली स्वतः शोक

गुणातीतस्वरूपायै प्रशास्त्र्यै शास्त्रयोनये ।
परभक्त्यैवप्राप्यायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥६०॥
परानन्दवती या च परानन्दप्रदायिनी ।
परानन्दात्मने तस्यै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥६१॥
शक्तिकृच्छक्तिरूपा या महाशक्त्यभिवन्दिता ।
तस्यै शक्तिविशिष्टायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥६२॥

रहित तथा स्वाश्रितों को सर्वदा सर्वस्व देनेवाली सर्वेश्वर श्रीरामजी से अभिन्न स्वरूपवाली श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥५९॥

सभी शास्त्रों के उत्पत्ति स्थान तथा सभी को प्रशासित करनेवाली गुणातीत स्वरूपवाली और पराभक्ति के द्वारा ही प्राप्त होनेवाली श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥६०॥

जो परम आनन्द स्वरूपवाली हैं तथा स्वाश्रित जनों को भी परमानन्द प्रदान करनेवाली हैं ऐसी परम आनन्दात्म स्वरूपिणी श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥६१॥

जो उमा रमा तथा ब्रह्माणी आदि महाशक्तियों से अभिवन्दित हैं तथा उन सभी शक्तियों को उत्पन्न करनेवाली विशिष्ट शक्ति स्वरूपा हैं उन अनन्त शक्ति विशिष्ट यानी सर्वशक्ति सम्पन्न मूल शक्ति रूपा श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥६२॥

वेदविद् वेदमाता या वेदविद्याप्रकाशिनी ।
तस्यै च वेदवन्द्यायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥६३॥
विश्वकृद् विश्वभृद् या च विश्वहृद् विश्वरूपिणी ।
विश्वस्य हेतवे तस्यै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥६४॥
अनुग्रहशरीरा या या चानुग्रहवारिधिः ।
तस्यै निग्रहशून्यायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥६५॥
अचिन्त्या योगिचिन्त्या या चिन्तया रहिता च या ।
तस्यै चिन्तापसारिण्यै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥६६॥

जो वेदों को उत्पन्न करनेवाली हैं उनकी माता तथा वेदों के वास्तविक स्वरूपों को जाननेवाली और वेद विद्या को प्रकाशित करनेवाली हैं उन वेदों के द्वारा वन्दित श्रीचरणकमलवाली सर्व वन्द्या श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥६३॥

जो विश्वकी सृष्टि करनेवाली तथा उस विश्वका भरण पोषण करनेवाली और अन्त में सव विश्वका संहार करनेवाली विश्व स्वरूपिणी हैं उन विश्वके निमित्तोपादान कारणरूपा सर्वात्मा श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥६४॥

जो अनुग्रह-कृपामय शरीरवाली हैं तथैव अनुग्रह के महासमुद्र हैं उन निग्रह से रहित परम करुणारूपा श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥६५॥

जो साधारणतया अचिन्त्य होते हुये भी योगि जनों द्वारा सर्वदा संचिन्त्य स्वरूपा हैं तथा सर्वदा चिन्ता से

या हिरण्यलतातुल्या हिरण्यगर्भसंस्तुता ।
तस्यै हिरण्यवर्णायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥६७॥
पद्मजासंस्तुता या च पद्मतुल्या सुकोमला ।
तस्यै पद्मासनायै हि श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥६८॥
अमृतवचना या च याऽमृतपददायिनी ।
तस्यै च मृत्युहारिण्यै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥६९॥
यस्या भासा विभान्त्यत्र भासका भास्करादयः ।
तस्यै महाविभासिन्यै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥७०॥

रहित हैं उन सव जनों की चिन्ता को दूर करनेवाली श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥६६॥

जो हिरण्य-सोने की लता के समान हैं तथा हिरण्यगर्भ-ब्रह्माजी से स्तुति की गई हैं उन हिरण्य वर्णवाली श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥६७॥

जो पद्मजा-लक्ष्मी द्वारा स्तुति की गई है तथा कमल के समान सुकोमल अंग वाली हैं उन कमल के आसन में विराजमान श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥६८॥

जो अमृत के समान मृतसंजीवनी दिव्य वाणी वाली हैं शरणापन्न जनों को अमृत पद-दिव्य साकेतधाम का प्रदान करनेवाली हैं उन मृत्यु का अपहरण करनेवाली श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥६९॥

जिनके प्रकाश से सभी भूमण्डलों पर प्रकाश करने

ब्रह्माण्युमारमादीनां देवीनाञ्चैकहेतवे ।

ब्रह्माण्यादिसुवन्द्यायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥७१॥

संस्तुता या च वाग्देवीसिन्धुजागिरिजादिभिः ।

करुणासिन्धवे तस्यै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥७२॥

यज्ज्ञानात् सर्वविज्ञानं याऽखिलज्ञानदायिनी ।

तस्यै ज्ञानस्वरूपायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥७३॥

वाले सूर्य चन्द्रमा प्रभृति प्रकाशित होते हैं उन महा प्रकाश स्वरूपा श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥७०॥

उमा रमा ब्रह्माणी प्रभृति समस्त देवीयों की प्रधान कारण रूपा तथा ब्रह्माणी रमा उमा आदि देवीयों से सदा समाराधित श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥७१॥

जो वाग्देवता-सरस्वती सिन्धु से उत्पन्न लक्ष्मीजी तथा गिरिजा-पार्वती प्रभृति से सर्वदा संस्तुत हैं उन करुणा मूर्ति सभी जनों से समाराधित श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥७२॥

जिन सर्व कारणरूपा श्रीसीताजी का ज्ञान हो जाने से कार्यरूप सभी जडाजड तत्त्व का ज्ञान हो जाता है तथा जो शरणापन्न सभी को सव प्रकार के तत्त्व ज्ञान को देनेवाली हैं उन सर्वज्ञान स्वरूपा श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥७३॥

जगज्जन्मादिहेतुर्या जगन्मूलं जगच्च या ।
तस्यै जगज्जनन्यै हि श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥७४॥
भयाभयविधातारः सर्वे यद्वशवर्त्तिनः ।
तस्यै च निखिलेश्वर्यै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥७५॥
यस्याः सीतेतिनामोक्तिर्यमदूतौघतर्जिनी ।
तस्यै चाभयदायिन्यै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥७६॥
शक्तिदा भुक्तिदा या च भक्तिदा मुक्तिदा च या ।
तस्यै हितस्वरूपायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥७७॥

जो संसार के उत्पन्न स्थिति तथा संहार का कारण स्वरूपा होने से जगत के मूल स्वरूपा हैं तथा स्वयं जगत् रूपा भी हैं उन सर्व जगत् की जननी श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥७४॥

भय विधायक यम प्रभृति पापी शासक देव अभय विधायक विश्व जन पोषक विष्णु प्रभृति सवदेव जिन श्रीसीताजी के वश वर्ति हैं यानी अधीन में रहकर ही श्रीसीताजी के निर्देशानुसार कार्य करते हैं उन सर्वेश्वरी श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥७५॥

जिनका '**श्रीसीता**' इसप्रकार का नामका उच्चारण मात्र ही यमदूत समूहों का तर्जन यानी दूर भगा देनेवाला है उन सभी समाश्रित जनों को अभय देनेवाली श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥७६॥

जो आश्रित जनों को शक्ति देनेवाली तथा भुक्ति

अणोरणीयसी या च महतश्च महीयसी ।
तस्यै च विभुमानायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥७८॥
रजसा तमसा शून्या या तमः परवर्त्तिनी ।
तस्यै परात्परायै च श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥७९॥
आदित्यान्तः स्थिता या च ह्यादित्यस्य प्रकाशदा ।
तस्यै चादित्यवर्णायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥८०॥
विश्वं कर्त्तुञ्च सक्तायै भर्त्तुं हर्तुं तथैव च ।
षड्विधैश्वर्ययुक्तायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥८१॥

भोग सामग्री देनेवाली और पारमार्थिक की इच्छा वालों को भक्ति तथा मुक्ति को भी प्रदान करनेवाली हैं उन सभीका हित करनेवाली हित स्वरूपा श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥७७॥

जो अणु से भी अति अणु स्वरूपा तथा महान् से भी अति महान् स्वरूपवाली हैं उन विभु परिमाण वाली सर्व व्यापक रूपा श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥७८॥

जो रजो गुण तथा तमो गुण से रहित होने से तमस आदि हेयगुणों से सर्वथा पर-अस्पृष्ट ही रहती हैं उन परात्पर स्वरूपा श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥७९॥

जो सूर्य के मध्य में स्थित होकर उसे नियत रूपसे प्रकाश प्रदान करती हैं उन सूर्य के समान वर्णवाली श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥८०॥

जो विश्वकी सृष्टि पालन तथा संहार करने में सशक्त

सदाचाररता या च सदाचारोपदेशिका ।
तस्यै धर्मप्रवर्तिन्यै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥८२॥
बोधिका त्रीरहस्यानामाकारत्रयशिक्षिका ।
तस्यै महोपकर्त्र्यै च श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥८३॥
प्राकृतगुणशून्यत्वान्निर्गुणा या प्रकीर्तिता ।
सद्गुणाम्बुधये तस्यै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥८४॥
चिदचिद्व्यापिकायै च चिदचित्तनवे तथा ।
चिदचित्तत्त्वभिन्नायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥८५॥

और षड् छ प्रकार के ऐश्वर्य से सुसम्पन्न हैं उन श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥८१॥

जो स्वतः सदाचार परायण तथा सदाचार का उपदेश करनेवाली हैं उन सनातन सत् धर्म के प्रवर्तन करनेवाली श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥८२॥

मन्त्रराज षडक्षर ब्रह्मतारक श्रीराममन्त्र मन्त्ररत्न-(द्वयमन्त्र) तथा चरममन्त्र इन रहस्यत्रयो का बोध करानेवाली और अनन्य शरणत्व अनन्य भोग्यत्व तथा अनन्य शेषत्व इन आकारत्रयों की शिक्षा देकर शरणापन्न जन समूहों का महान् उपकार करनेवाली उन सर्वोपकारणशीला श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥८३॥

प्राकृत गुणों से रहित होने से जो निर्गुण के रूपमें शास्त्रों में कही गई है उन सद्गुणों के महासमुद्र श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥८४॥

चित-चेतन तत्त्व तथा अचित-अचेतन तत्त्वों को

वात्सल्यरससिन्धुर्या करुणावरुणालयः ।
लावण्यनिधये तस्यै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥८६॥
सर्वत्र सर्वदा या च श्रीमद्रामपरायणा ।
तस्यै महासतीश्वर्यै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥८७॥
लोकाभिरामलोकायै लोकाभिराममूर्त्तये ।
लोकाभिरामभावायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥८८॥
यस्याश्चानन्दविज्ञानाज्जायते न भयं क्वचित् ।
तस्यै चानन्ददायिन्यै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥८९॥

व्यासकर रहनेवाली और चित् तथा अचित् शरीर वाली होते हुये भी चित् तत्त्व तथा अचित् तत्त्वों से सर्वथा भिन्न रूपसे स्थित श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥८५॥

जो वात्सल्य रसके समुद्र तथा करुणा के महासमुद्र हैं उन लावण्य के महाखजाने श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥८६॥

जो सर्वदा सव जगहों में सर्वेश श्रीराम परायण होकर के ही रहती हैं उन महासतीयों से आराधित श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥८७॥

सर्वलोक मनमोहक सुन्दर रूपवाली तथा सर्वजन आकर्षक दिव्य मूर्तिवाली और लोकाभिराम-अत्यन्त आकर्षक दिव्य तथा सुन्दर भाव वाली श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥८८॥

जिन आनन्द स्वरूपिणी श्रीसीताजी के स्वरूप को

प्राणानां प्राणरूपायै ज्योतिषां ज्योतिषे तथा ।
सूर्यान्तवासशीलायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥९०॥
मूर्त्तामूर्त्तस्वरूपायै तथैकानेक मूर्त्तये ।
दूरेऽदूरे स्थितायै च श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥९१॥
सर्वार्चनार्चनीया या सर्वेभ्यः फलदा च या ।
तस्यै सर्वशरीरायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥९२॥
वेदे रामायणे चैव पुराणे भारते तथा ।
पाञ्चरात्रे च गीतायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥९३॥

जान लेने पर मानव को कही भी किसी प्रकार का भय नहीं होता है उन सभी को आनन्द देनेवाली श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥८९॥

जो प्राणों का भी प्राण स्वरूप तथा ज्योतियों का भी ज्योति रूपा हैं उन सूर्य के मध्यम में निवासशील श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥९०॥

जो मूर्त्त स्वरूपा तथा अमूर्त्त स्वरूपा हैं और अनेक मूर्ति के स्वरूप में भी विद्यमान हैं तथैव दूर तथा नजदीक में भी स्थित हैं उन सर्व स्वरूपिणी श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥९१॥

जो सभी प्रकार के सात्विक पूजा सामग्रीयों से सदा पूजा करने योग्य तथा सभी पूजकों को यथा योग्य पूजा के फलों को देनेवाली हैं उन सर्व शरीर स्वरूपा श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥९२॥

जिनका दिव्य चरित वेद श्रीमदरामायण महाभारत

मेधया वेदपाठेन तपसालभ्यते न या ।
तस्यै भक्त्यैकलभ्यायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥९४॥
कर्माद्यपरतन्त्रायै पूर्णषाड्गुण्यमूर्त्तये ।
विकाररहितायै च श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥९५॥
ज्ञानिनां ज्ञेयरूपायै चाराध्यायै च कर्मिणाम् ।
भक्तानां भजनीयायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥९६॥

तथा पुराणों और पाञ्चरात्रागमों में अति विस्तृत रूपसे गान किया गया है उन सर्वशास्त्र ज्ञेय श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥९३॥

जो मेधा यानी विशिष्ट बुद्धिवाले से वेदपाठ करने से या दीर्घकाल के तपस्या से भी प्राप्त नहीं होती पर एकमात्र अनन्य भक्ति से प्राप्त की जा सकती हैं उन भक्ति सुलभा श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥९४॥

जो श्रीसीताजी कर्म के अधीन कभी भी नहीं रहती हैं तथा ज्ञान बल ऐश्वर्यादि छ गुणों से परिपूर्ण मूर्ति-स्वरूपवाली हैं उन सर्व विकार रहित श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥९५॥

जो ज्ञानि जनों के लिये ज्ञेय स्वरूप हैं तथा कर्म में आस्थावालों के लिये समाराधनीय हैं तो भक्त जनों के लिये सदा भजनीय हैं ऐसी सर्वरूपा श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥९६॥

महापुरुष रामस्य प्रियायै दिव्यमूर्त्तये ।
प्रधानपुरुषेश्वर्यै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥९७॥
जगद्वन्द्यपदाब्जायै जगतो गुरवे तथा ।
विज्ञानाम्बुधिरूपायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥९८॥
यस्याः स्मरणतो याति बाह्याभ्यन्तः पवित्रताम् ।
पवित्रताब्धये तस्यै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥९९॥
यच्छक्त्या शक्तिमन्तश्च विधिविष्णुशिवादयः ।
शक्तिवारिधये तस्यै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥१००॥

महापुरुष सर्वेश्वर श्रीरामजी की प्रिया तथा दिव्य मूर्त्ति और प्रधान पुरुषों की स्वामिनी श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥९७॥

संसार से वन्दनीय श्रीचरणकमलवाली तथा जगत के गुरु और विज्ञान के समुद्र स्वरूपा श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥९८॥

जिनके स्मरण मात्र से ही बाहर तथा अन्दर तत्काल पवित्र हो जाता है उन पवित्रता के महासमुद्र श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥९९॥

जिनकी असीम शक्ति से ही ब्रह्मा विष्णु शंकर इन्द्र वरुण आदि देववर्ग शक्ति वाले होकर अपने अपने कार्यों में समर्थ होते हैं उन शक्ति के समुद्र श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥१००॥

रक्षति सकलं विश्वं यस्याः पत्युश्चपादुका ।
तस्यै पतिप्रियायै च श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥१०१॥
यस्याः शक्त्या जगत् सर्वं यन्त्रवद् भ्राम्यते सदा ।
तस्यै जगन्नियन्त्रिण्यै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥१०२॥
रामेण सृज्यते विश्वं यत्कारुण्यदिदृक्षुणा ।
कारुण्याम्बुधये तस्यै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥१०३॥
उपादानं निमित्तं या जगतश्चोर्णनाभिवत् ।
हेतवे जगतस्तस्यै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥१०४॥

जिनके पतिदेव की पादुका सम्पूर्ण विश्वकी रक्षा करती है उन पति प्रिया श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥१०१॥

जिनकी अलौकिक शक्ति से सम्पूर्ण संसार सर्वदा यन्त्र के समान घूमता रहता है उन सर्व जगत का नियन्त्रण करनेवाली श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥१०२॥

जीव दीनता के पर वश करुणा स्वरूप सर्व सर्जक श्रीरामजी से जिनके द्वारा संसार की रचना करवाई जाती है उन करुणा के अम्बुधि-महासमुद्र रूपा श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥१०३॥

जो ऊर्ण नाभि-लूता तन्तु जीव के समान संसार का निमित्त तथा उपादान कारण हैं उन जगत के अभिन्न नि-

सेव्यं च यत्परं नास्ति कीर्तनीयं न यत्परम् ।

तत्त्वं न यत्परं तस्यै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥१०५॥

कारणं कारणानां या मङ्गलानाञ्च मङ्गलम् ।

तस्यै चाश्रयणीयायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥१०६॥

दाता न यत्परः कश्चित् त्राता न यत्परः क्वचित् ।

तस्यै परशरण्यायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥१०७॥

मित्तोपादान कारणरूपा श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥१०४॥

जिन श्रीसीताजी से अतिरिक्त सेवा करने योग्य दूसरा कोई नहीं है तथा कीर्तन करने योग्य भी श्रीसीताजी से अतिरिक्त कोई नहीं है और जिनसे परतत्त्व भी कोई नहीं उन सर्व तत्त्वरूपा श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥१०५॥

जो कारणों का भी कारण हैं तथा मंगलों का भी मंगल रूप हैं उन आश्रयणीय स्वरूपा श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥१०६॥

जिन सर्वदातृ-श्रीसीताजी से अतिरिक्त कोई दाता नहीं तथा सर्वजन त्राणकर्तृ श्रीसीताजी से अन्य कोई भी रक्षक नहीं ऐसी परम शरणागत जन प्रतिपालक श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥१०७॥

श्रितानामनुकूला या प्रतिकूला श्रितद्विषाम् ।
तस्यै प्रपदनीयायै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥१०८॥
या श्रियः श्रीस्वरूपा श्रीसम्प्रदायप्रवर्त्तिका ।
गुरूणां गुरवे तस्यै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥१०९॥
दुर्वादध्वान्तमार्त्तण्डराघवानन्दनिर्मिता ।
श्रीसीतामङ्गलानां च माला स्यान्मङ्गलप्रदा ॥११०॥

जो शरणागत जनों के अनुकूल रहती हैं तथा आश्रित जनों के साथ द्वेष करनेवालों के प्रति प्रतिकूल होकर के उन्हें दण्डित करती हैं उन शरण ग्रहण करने योग्य श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥१०८॥

जो श्री के भी श्रीस्वरूपा हैं तथा श्रीसम्प्रदाय (श्रीरामानन्दसम्प्रदाय) का प्रवर्तन-आरम्भ यानी चालू करनेवाली हैं उन गुरुओं के भी गुरु परम गुरु श्रीसीताजी का सर्वदा मंगल हो ॥१०९॥

दुर्वादध्वान्त मार्तण्ड जगद्गुरु श्रीराघवानन्दाचार्य प्रणीता यह श्रीसीता मंगल माला पाठ करनेवालों को मंगल प्रदान करनेवाली हो ॥११०॥

इत्यानन्दभाष्यसिंहासनासीन

जगद्गुरुश्रीरामानन्दाचार्य श्रीरामेश्वरानन्दाचार्य

प्रणीता **बालबोधिनी** समाप्ता

श्रीसीतारामार्पणमस्तु

卐 श्रीरामः शरणं मम 卐